मधुबन ओम् शान्ति अंक 283 फरवरी 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(16-01-16)

परमप्यारे प्राण अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा साकार स्मृतियों में समाये हुए, अलौकिक वरदानों से भरपूर बन, दिव्य अनुभूतियां करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा बाबा की यादों में लवलीन रहने वाले देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – आप सब जनवरी मास में बहुत अच्छी तपस्या कर रहे हो। चारों तरफ से आप सबके शक्तिशाली योग के वायब्रेशन पहुंचते रहते हैं। इस अव्यक्त मास में सभी विशेष ब्रह्मा बाप समान डबल लाइट स्थिति बनाने वा सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए बहुत अच्छी रेस कर रहे हो। प्यारे अव्यक्त बापदादा ने मुझे भी इस मास विशेष लण्डन जाने की प्यार से छुट्टी दी। वहाँ भी 12 दिनों में बहुत अच्छी सेवायें हो गई। सबसे मिलन मनाते कल ही वापस अपने मधुबन बेहद घर में पहुंची हूँ। यहाँ तो बाबा के बच्चों की बहुत अच्छी रिमझिम लगी हुई है। सभी बाबा के स्नेह में भाग-भाग कर पहुंच गये हैं। बाबा भी अपने बच्चों के स्नेह में समाते हुए थोड़ा समय भी साकार में आते हैं तो चारों तरफ खुशी की लहर छा जाती है। हम सब कितने भाग्यवान हैं जो संगमयुग पर भगवान हमारा साथी बनता है। वह ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, सर्वशक्तिवान है। जरूर हर एक के अन्दर सूक्ष्म यह फीलिंग रहती होगी कि उसकी सर्व शक्तियां हमारे साथ-साथ हैं। उसने हमें अपना बनाकर इस बेहद नाटक में अच्छे से अच्छा पार्ट बजाना सिखाया है।

बाबा कहते बच्चे, संगमयुग का यह समय बहुत-बहुत मूल्यवान है, इसमें अपने हर संकल्प, श्वांस और समय को सफल करते चलो। ड्रामा के नॉलेज की जो गहराई है उसे समझकर सदा हर्षित रहो क्योंकि इसकी हर सीन में कोई न कोई कल्याण समाया हुआ है, इसलिए किसी की कमी कमजोरी को न देख, हर एक की विशेषता पर ही नज़र जाए क्योंकि हर एक प्रभु का प्यारा है। मेरी तो सबके प्रति यही भावना है कि अब अन्तिम घड़ियों में देह सहित सब बातों से फ्री हो, बाबा को अपना साथी बनाए, साक्षी हो पार्ट बजाते कदम कदम पर पदमों की कमाई जमा करते चलो। ऐसे खुदा के खिदमतगार बन जाओ जो वह अपने दिलतख्त का मालिक बना ले।

सारे कल्प में देखो, कितने थोड़े से बच्चे पदमापदम भाग्यशाली रहे जिन्होंने डायरेक्ट साकार में ब्रह्मा बाप की पालना ली, परन्तु मैं देखती हूँ कि अव्यक्त पालना लेने वालों का भी भाग्य कम नहीं है। कैसे पिछले 47 वर्षों से अव्यक्तवतन वासी बाबा वतन में रहते भी देश विदेश के सभी बच्चों को साकार भासना दे रहे हैं। मुझे तो वन्डर लगता कि दूर-दूर किसी भी कोने में रहने वाले बच्चे के दिल से निकलता, मेरा बाबा, मीठा बाबा... बहुत प्यार से बाबा को याद करते और उस दिल की याद से दिलवाला के साथ का अनुभव करते हैं। सभी के दिल में अब तो यही तात है कि हमें अब बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर दिखाना है।

इस नये वर्ष में दूसरी सब बातों से उपराम बन एक ही उमंग सदा रहे कि मुझे कर्मेन्द्रिय जीत, विकर्माजीत, प्रकृतिजीत और कर्मातीत बनना ही है, इसके लिए जितना हो सके साइलेन्स की शक्ति जमा करनी है। साकार वतन में रहते बुद्धि बल से अव्यक्त वतन और मूलवतन की सैर करनी है। बोलो, इन्हीं अनुभूतियों में रहते उड़ती कला में उड़ रहे हो ना।

अच्छा! सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"सम्पूर्ण पवित्रता के आधार पर रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करो"

1) आप ब्राह्मण बच्चों की सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - **स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी (पवित्रता)**। इस प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनैलिटी है तो इस पर्सनैलिटी से स्वत: सेवा होगी।

2) आप बच्चे बाहर के रूप में भल साधारण पर्सनैलिटी वाले हो लेकिन रुहानी पर्सनैलिटी में सबसे नम्बरवन हो। आपके चेहरे और चलन में प्युरिटी की पर्सनैलिटी झलकनी चाहिए। जितना-जितना जो प्योर है उतनी उनकी पर्सनैलिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है और वह पर्सनैलिटी ही सेवा करती है।

3) प्युरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में सहज सफलता दिलाती है लेकिन यदि एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र न रहे तब कहेंगे पवित्रता की पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने वाले।

4) रूहानी पर्सनैलिटी वाली पवित्र आत्मायें अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाते, सफल करते हैं। ऐसी पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं।

5) रूहानी पर्सनैलिटी वाली विशेष आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, बोल.. सबमें अलौकिकता होगी, साधारणता नहीं। साधारण कार्य करते भी शक्तिशाली, कर्मयोगी स्थिति का अनुभव करायेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो फालो फादर।

6) आजकल पर्सनैलिटी वाली आत्मायें सिर्फ नामीग्रामी बनती हैं अर्थात् नाम बुलन्द होता है लेकिन आप पवित्रता की पसनैलिटी वाले सिर्फ नामीग्रामी अर्थात् गायन-योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजनीय योग्य भी बनते हो। कितने भी बड़े धर्म-क्षेत्र में, राज्य-क्षेत्र में, साइंस के क्षेत्र में पर्सनैलिटी वाले प्रसिद्ध हुए हैं लेकिन आपकी रूहानी पर्सनैलिटी समान 63 जन्म पूज्यनीय नहीं बने हैं।

7) पवित्रता आपके इस संगमयुगी श्रेष्ठ जीवन की महानता है। आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार पवित्रता है, पूज्य-पद पाने का आधार भी पवित्रता है। ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है। आदि-अनादि स्वरुप भी पवित्रता है।

8) पवित्रता इस ब्राह्मण जीवन के जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ब्राह्मण जीवन की महानता पवित्रता है।

9) यह पवित्रता आपके जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है। पराई चीज़ अपवित्रता है न कि पवित्रता। बाप का वरदान पवित्रता है, रावण का श्राप अपवित्रता है। आपका स्व-स्वरुप पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है, आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे।

10) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है, जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति की अनुभूति अवश्य होगी। मंसा संकल्प में पवित्रता है तो मन्सा में सदा सुख स्वरुप, शान्त स्वरुप की अनुभूति होगी। पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है - सदा स्वयं में भी सुख-शान्ति स्वरुप और दूसरों को भी सुख-शान्ति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर सदा सुख, शान्ति और शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी।

11) पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते हो। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है - प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन - इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का।

12) फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में जाने का सिर्फ एक संकल्प का साधन है, वह एक संकल्प है -'मैं हूँ ही ओरीज्नल पवित्र आत्मा।' अनादि और आदि दोनों काल का ओरीज्नल स्वरूप पवित्र है। अपवित्रता तो आर्टीफिशल है, रीयल नहीं है। शूद्रों की देन है। शूद्रों की चीज़ ब्राह्मण कैसे यूज़ कर सकते।

13) वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइन्ड रुप में रहो तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो। सिंगल नहीं, जब सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है। नहीं तो पवित्रता

का सुहाग और श्रेष्ठ भाग्य सदा आपके साथ है।

14) सदा यह संकल्प रखो कि मैं अनादि आदि रीयल रूप में पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखो तो उसका भी अनादि आदि रीयल रूप देखो। रीयल को रियलाइज करो, तो अपवित्र संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होगी।

15) दु:ख-अशान्ति की उत्पत्ति अपवित्रता से होती है। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दु:ख अशान्ति कहाँ से आई। आप सब पतित-पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित-पावन हो, तो जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं तो पावन होंगे ही। ऐसी पावन पवित्र आत्माओं के पास सुख और शान्ति स्वत: ही है।

16) अपना निजी-स्वरुप व वरदानी स्वरुप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरुप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था।

17) जैसे देह और देही अलग-अलग हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया है; मेरे को मैं समझ लिया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दु:ख और अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो ब्राह्मणपन के नहीं, शूद्रपन के हैं, इनको भी मेरा समझने से माया के वश हो जाते हो और फिर परेशान होते हो।

18) बाप-समान बनना है वा बाप के समीप जाना है तो अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: स्वरुप में हो। आत्मा के असली गुण-स्वरुप और शक्ति-स्वरुप स्थिति से नीचे नहीं आओ।

19) आप सबकी पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की प्रवृत्ति, फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति - देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र नहीं बना सकेंगे।

20) श्रेष्ठ कर्मों का फाउन्डेशन है ''पवित्रता''। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन मन्सा संकल्प में भी अगर कोई आत्मा के प्रति विशेष लगाव वा झुकाव हो गया, किसी आत्मा की विशेषता पर प्रभावित हो गये या उसके प्रति निगेटिव संकल्प चले, ऐसे बोल वा शब्द निकले जो मर्यादापूर्वक नहीं हैं तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे।

21) इस ईश्वरीय सेवा में बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महापाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। किसका दु:ख लेकर सुख देना यही सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का काम है। ऐसे पुण्य करते-करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

22) कोई भी व्रत रखना अर्थात् श्रेष्ठ वृत्ति बनाना। तो जैसी वृत्ति होती है वैसी दृष्टि, कृति स्वत: ही बन जाती है। तो अपनी पवित्र शुभ वृत्ति, पवित्र शुभ दृष्टि रखो। जब कोई से मिलते हो तो फेस में भ्रकुटी के बीच चमकती हुई आत्मा को देखो, इससे आपकी वृत्ति चंचल नहीं होगी। वृत्ति परिवर्तन से दृष्टि स्वत: बदल जायेगी।

23) पवित्रता की शक्ति महान शक्ति है, पवित्रता की अग्नि ऐसी है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। अन्त में जब सम्पूर्ण पवित्र हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प के लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। योग ज्वाला स्वरूप हो जायेगा।

24) आप लोगों का जो पहला स्लोगन है – ''पवित्र बनो राजयोगी बनो'', अब यह स्लोगन प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ तब अपना निजी-स्वरूप व वरदानी-स्वरुप स्मृति में रहेगा। अपवित्रता का और विस्मृति का नामोनिशान न रहे तब वरदानों का कोर्स करा सकेंगे अर्थात् वरदानी मूर्त बन वरदान दे सकेंगे।

25) सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता का बीज है। व्यर्थ संकल्प चलना, मैजारिटी बच्चों में अभी यह संस्कार रहा हुआ है। व्यर्थ संकल्प का आधार मन है, जो मनमनाभव होने नहीं देता इसलिए श्रीमत रूपी लगाम टाइट कर व्यर्थ संकल्पों की अपवित्रता को खत्म करो।

26) बापदादा का मुख्य फरमान है निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म से पवित्र बनो। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। संकल्प में भी अगर पुराने अशुद्ध संस्कार टच करते हैं, व्यर्थ संकल्प चलते हैं या स्वप्न आते हैं तो भी सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे।

27) फरिश्ता बनने के लिए कोई भी इम्प्युरिटी अर्थात् पांच तत्वों की आकर्षण आकर्षित न करे। जरा भी मन्सा में भी इमप्यूअर अर्थात् अपवित्रता का संकल्प न हो तब फरिश्तेपन की निशानी में टिक सकेंगे।

28) पवित्रता और अपवित्रता का कारण है स्मृति। जब स्मृति रहती है कि यह देवी है तो स्मृति, दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है और स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति, वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खैंचती है। वहाँ रूप को देखेंगे और वहाँ रूहानियत को देखेंगे।

29) अगर कोई भी अपवित्रता वृत्ति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित नहीं हो सकते इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो। विशेषताओं के साथ अगर कोई एक भी कमजोरी है तो एक कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है।

"ऐसे गुणग्राही बनो जो मेरे को देख दूसरों का अवगुण चला जाये"

(दादी जानकी)

जो सदा ही सुख-शान्ति में रहते हैं उसको सम्पन्न बनना पॉसिबुल है। सम्पन्न माना सुख-शान्ति में सम्पन्न, सम्पत्तिवान। परिवर्तन माना अपने में सम्पूर्ण सम्पन्नता लाना। लौकिक दुनिया में कोई थोड़े होते हैं जो सम्पत्तिवान भी होते हैं परन्तु धर्मात्मा होते हैं, पुण्यात्मा होते हैं, लौकिक का कोई अभिमान नहीं होता है। धर्मात्मा जो होते हैं, सच्ची दिलवाले बड़ी दिलवाले होते हैं। आप कौन हो? देवता बनने वाली आत्मा पहले धर्मात्मा बनती है। हर कर्म उनका श्रेष्ठ होता है। सफल करने में बहुत गुप्त होते हैं। तो प्रैक्टिकली अगर ऐसी जीवन बनती है ना, तो उसके लिए अति रिगार्ड होता है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को निमित्त बना करके सिखाया है, वह प्रैक्टिकल कौन करता है? क्योंकि प्रैक्टिकल करने का प्रभाव बहुत होता है। तो गुणग्राही बनना माना गुण का ग्राहक बनना। मेरे को देख किसी का अवगुण चला जाये। ऐसे ऑफर करने वाले बाबा के फूल बच्चे बनो।

6-5-13 (जयन्ती बहन ने दादी जी की क्लासेस से कुछ मुख्य बातें सुनाई) बुद्धि की एक्सरसाइज करने से बुद्धि छोटी या मोटी नहीं होगी। जब स्वच्छता हमारे अन्दर होती है तब सत्यता हमारे अन्दर ठहर सकती है इससे आत्मा को आनंद का अनुभव प्राप्त हो सकता। इस एक एक बात की गहराई में जाओ तो बहुत सारी बातें निकल आती हैं। भगवान ही मेरा संसार है तो मेरे संस्कार भी भगवान समान बन सकते हैं। ज्ञान और योग का सार यही है कि हम सबके साथ ताल-मेल बना करके रखें, सबसे पहले तो हमारी स्थिति ऐसी हो जो हम औरों के साथ मिलजुलकर संगठन में एकरस स्थिति में रह सकूँ और संगठन को एकमत बनाकर रख सकूं।

दूसरा क्लास

"पुण्यात्मा वह है जो अच्छे संग में रहे सबको अच्छा संग दे, सदा श्रेष्ठ कर्म करे"

जो मंथन नहीं करता है वो मोटी बुद्धि है। ज्ञान है सोल कॉन्सेस रहना, इसके लिए ड्रामा की नॉलेज स्मृति में रहे। सबसे बड़ी बीमारी है - थकना, मूँझना, घबराना। मेरे से नहीं होता है ना अरे, कौन हो! बकरी हो क्या? जितनी भी स्थिति जिसकी है, सेवा और संग, साथ से फायदा होता है।

परिवर्तन मुझे होना है, बाबा देखेगा बच्ची को कोई बात नहीं, सभी देखेंगे इसको और कोई बात ही नहीं है, परिवर्तन क्या होना है? विकर्माजीत बनना है। उसकी निशानी है, कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। जो संकल्प आता है तो वह कर्म में भी आता है। बहुत डीप है। मेरा संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ है तो इससे मेरे लिए भी फायदा, आपको भी फायदा। एक तरफ मैं विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ कर रही हूँ, दूसरे तरफ कर्म करते कर्मातीत, सम्बन्ध में होते कर्मातीत यानि किसी के साथ हिसाब-किताब नहीं। यह शुद्ध संकल्प भावना वाला संकल्प औरों को भी परिवर्तन करता है। पर पहले मैं ऐसा स्वरूप रहूँ विकर्माजीत, कर्मातीत और श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो बाबा कैसा था, वह अनुभव करें क्योंकि आप सब भी बैठे हो सिर्फ बाबा का परिचय सुनने से नहीं बैठे हो, बाबा कैसा था, अभी भी कैसा है... जिसको परिवर्तन होना है वह दस बारी बाबा के रूम में जावे। जा करके आधा घण्टा एक घण्टा बैठो, पता चलेगा बाबा कैसा है, उन जैसा मुझे बनना है। मुझे किससे भेंट नहीं करनी है क्योंकि हरेक का पार्ट अपना है। सबका भला हो यह भावना हो तो परिवर्तन मुझे क्या होना है बस, बाबा जैसा! बाबा कैसा था, कैसा है, अभी भी है, अच्छी तरह से काम कर रहा है और ज्यादा कर रहा है। तो जहाँ ऐसे अच्छे स्थान मिले हैं उनका फायदा उठाओ। जब याद में बैठो तो कोई संकल्प न चलें, भले कार्य हुआ, पुरा हुआ। पूछे कोई कैसे किया? देखो वन्डर है, कहो हो गया। सेवा है मुस्कराने की।

देखते हैं इतना सब कार्य करते हुए भी खुश रहते हैं।

एक मन की सफाई, दूसरी स्थूल सफाई न होती तो बीमारियां हो जाती, तीसरा मुस्कराना न आता हो तो भी बीमार कहेंगे। यह परिवर्तन की घड़ियां है, अभी मुझे होना है तो बाबा और परिवार एकदम साथ देता है। परिवार का प्यार बहुत काम करता है।

सब बातों का ज्ञान तो है ना, मेरा पूर्व जन्म का या इस जन्म का भी कोई कर्मबन्धन हो, किसी के साथ भी, भले वह मेरे बहन भाई या पति पत्नि हैं, जन्म ही लिया या शादी भी किया, वह पूर्व जन्मों के कर्मो अनुसार। पर अभी उस लौकिक लाइफ का अंश मात्र भी न हो, जैसे बाबा, यह मेरी बहू है, यह मेरी वाइफ है, यह भान नहीं रहा। बाबा के बने हैं तो भाग्यवान हैं, पर ईश्वरीय परिवार में चलते-चलते किसके साथ कोई हिसाब-किताब ऐसा होता है जो रियलाइज नहीं करते हैं, बढ़ाते रहते हैं, वह फिर चुक्तू करने के लिए बड़ी रियलाइजेशन चाहिए। यह हमारी अभी की लाइफ ही डिफरेन्ट है। हम क्या थे, क्या हैं...। पहले थे बॉडी-कॉन्सेस, अभी सोल-कॉन्सेस हैं।

तो सम्बन्ध में न्यारे हो करके रहो, किसको दु:ख नहीं दो, ऐसे अच्छे कर्म करेंगे, आज्ञाकारी रहेंगे तब आशीर्वाद मिलेगी। जब मैं अच्छी बनेंगी तब आप सब से दुआयें मिलेगी। मैं अच्छे संग में रहूँ, औरों को यह संग दूँ, यह है पुण्यात्मा बनना। बाबा देखता है बच्चा देह-अभिमान को छोड़, न्यारा बन मेरी याद में बैठा है तो बाबा का प्यार मिलता है। यह शक्ति है याद में। जैसे साकार में बाबा को देखने से अशरीरी हो जाते थे फिर ऐसी ही आदत डालनी है। योग के वायब्रेशन से औरों को साक्षात्कार होगा, कइयों को मधुबन का साक्षात्कार यहाँ बैठे होता है। मधुबन आते हैं तो मधुबन को देख भूलते नहीं हैं, तो वह शक्ति चला रही है। सब राज़ी-खुशी हो तो दुआयें सबकी चला रही है, बाबा की अलग हैं, बाबा दुआओं के साथ गुप्त सकाश भी देता है। शिवबाबा कहता है मैं इनसे कराता हूँ, मैं नहीं करता, ऐसी देही-अभिमानी स्थिति, ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न हो। तो बाबा को ऐसा लायक बच्चा चाहिए जो बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बने।

तीसरा क्लास

"सच्चाई, प्रेम और विश्वास का अनुभव करने के लिए अभिमान और निराशा रूपी अवगुण से मुक्त रहो" (दादी जानकी जी)

जो जिस लक्ष्य में निश्चय रखते हैं, उस अनुसार वह लक्षण आते ही हैं। जिसका साथी है भगवान उसको क्या करेगा आंधी और तूफान, इसमें निश्चय की बात नहीं है। निश्चय बुद्धि है उसका प्रैक्टिकल अनुभव किया है। उसी अनुभव से हम कहते हैं तो उसमें विश्वास बैठता है। सच्चाई, प्रेम, विश्वास अन्दर से न सिर्फ बीज पड़ा है बल्कि उसका फल खा रहे हैं। यह सच्चा नहीं है पर तुम सच्ची बनो। अन्दर से सच्चाई, प्रेम और विश्वास से सारा कार्य चल रहा है, इसी से कई कार्य सफल हुए हैं। मैंने ही किया तो यह अभिमान या मैं नहीं कर सकती हूँ तो निराशा, यह दो अवगुण सच्चाई, प्रेम और विश्वास का अनुभव करने नहीं देते हैं। जो मेरे से औरों को भी फल मिले, जो बाबा कहता है इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े। दादियों में कोई ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं है लेकिन उनकी सच्चाई, प्रेम और विश्वास से आज यह अव्यक्त पालना हो रही है। तो हम लोगों में जो निश्चय का बल भरा है, उनसे अनेक प्रकार की बेहद सेवायें हुई हैं, हो रही हैं, अन्त तक होती रहेंगी।

गति सद्गति दाता बाप है उसने माताओं, शक्तियों को आगे रखा है। निश्चय का यह प्रैक्टिकल सबूत है कि उनका रिकॉर्ड अच्छा होगा और वही बड़ों का रिगार्ड रखेंगे। पूर्वजों को रिगार्ड देने से उनके सूक्ष्म वायब्रेशन बड़ी शक्ति दे रहे हैं, सब शक्तियाँ हाज़िर हैं। कमजोरी की बातें न सुनना, न सुनाना। कोई भी सरकमस्टांश आदि की लम्बी बात नहीं करना क्योंकि बाबा कौन है? कैसा है? क्या खुद करता है? कैसे कराता है? यह कभी बैठके सोचो, ज्ञान की गहराई में जाओ तो यह सारी बातें आपेही खत्म हो जायेंगी। यह है प्रभु लीला। तो ऐसे परमात्मा के अन्त में जाना, बेअन्त खुशी को पाना, जिसका कोई पारावार नहीं। तो सुख नहीं कहेंगे, बेअंत खुशी, वह खुशी बांटेगा। कोई भी उसके सामने आयेगा तो वह खुशी देगा। इतना खुशी जो बेफिकर बादशाह, बिगर कौड़ी बादशाह प्रैक्टिकली बाबा ने प्रमाण बनाया है। निश्चय से विजय पाई है, सच्चाई से यहाँ पहुँचे हैं, तो सम्भलके बोलो, सम्भलके सोचो। रीस नहीं करो, रेस भले करो।

चौथा क्लास

"भगवान की दया और सबकी दुआयें मुझ आत्मा को सर्वगुण सम्पन्न बना देगी"

बाबा के महावाक्यों से ही निश्चय बैठता है। जो निश्चयबुद्धि है वह निश्चिंत रहता है। निश्चय बुद्धि की विजय होती आ रही है। बाबा हमको कहता है बेफिकर रहो, खुद बहुत फिकर करता है। जितना बच्चे तन-मन-धन से इन्श्योर करेंगे उतना ही मैं जिम्मेवार हूँ, रिटर्न देने के लिए। जब भक्तिमार्ग में देता हूँ, कोई कहते हैं इसने दान-पुण्य अच्छा किया है तो इसको अच्छे घर में जन्म मिला है, प्रैक्टिकल में देखा है। पूर्व जन्म में कुछ अच्छे कर्म किये हैं तब अच्छे घर में जन्म मिला है। तो अभी प्रैक्टिकल देखते हैं जितना अच्छे कर्म बाबा करा रहा है, हम नहीं कर रहे हैं बाबा करा रहा है और प्रत्यक्ष फल का अनुभव करा रहा है। अभी ही जैसे सुख शान्ति की दुनिया में रहते हैं। यज्ञ में बीज बोना माना अन्त मते सो गति अच्छी होगी। अभी भी कोई कमी नहीं होगी। मेरी तो अन्त मति अच्छी होगी ऐसा किसको निश्चय है हाथ उठाओ। जितना बाबा के घर की सेवा करो, उतना अच्छा रहोगे, ये गैरंटी है इसलिए निश्चय बुद्धि से निश्चिंत रहो क्योंकि सब अच्छा होना है।

त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी होकर रहो। पास्ट की कोई बात याद नहीं हो, प्रेजेंट की बात ही याद हो तो बहुत फायदा है। किसी का अवगुण न देखो तो मैंने देखा है, यह भी एक बहुत अच्छी विधि है सर्वगुण सम्पन्न बनने की। किसी का अवगुण देखेंगे तो मेरा अवगुण औरों को पहले दिखाई पड़ेगा, यह बड़ा सूक्ष्म हिसाब-किताब है। मुझे भगवान की दया से, सबकी दुआओं से सर्वगुण सम्पन्न बनना है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ पर्सनल है, पर परिवार में रहते हुए सर्वगुण सम्पन्न बनना। स्व-उन्नति के लिए और ईश्वरीय परिवार से सम्बन्ध बनाके रखने के लिए, सहयोगी बनने और बनाने के लिए सबसे अच्छी और बड़ी बात यह है कि हर एक में विशेषता देखो, गुण ही देखो। गुण और विशेषता प्रैक्टिकल लाइफ में है और खूबी सूक्ष्म है। कोई भी छोटी सी बात है, उसे ठीक कर दिया तो ऐसे अनेकों खूबी हो सकती हैं। यह ठीक नहीं होता है... चुप रहो ना। बाबा ने मुझे ऐसे ही नहीं अपना बनाया है, उसने अपना नाम बाला करने के लिए बनाया है।

भले चार सबजेक्ट हैं, पर सेवा के निमित्त ज्ञान जीवन में लाना आवश्यक है। ज्ञान कहता है योग ऐसा हो जो योग लगाना न पड़े, योगयुक्त, ज्ञानयुक्त, राज़युक्त, युक्तियुक्त रहें, ऐसे अपने आपको अच्छी तरह से प्रैक्टिस करते चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेनी हैं। चारों सबजेक्ट एक दो को साथ देती हैं। तन मन धन सम्बन्ध अच्छा तभी रहे जब मन अच्छा है। तन अच्छा रहे तो मन अच्छा है। मन में कोई इच्छा ममता न हो, नहीं तो न तन अच्छा, न मन अच्छा, न सम्बन्ध अच्छा रहता है। मोटी बुद्धि यानि शिवबाबा जो कह रहा है वो समझ नहीं रहे हैं। ओम् के अर्थ में टिक जाने से मैं कौन हूँ का पता चलता है, तो लाइफ में बहुत फर्क दिखाई पड़ता है। मन अगर व्यर्थ से शान्त है, कोई भी कारण से मेरा संकल्प न चले। चलता है तो शान्ति का अनुभव नहीं होगा यानि हमारी पढ़ाई और कमाई का सार है, संकल्प शान्त शुद्ध बन जाए। बाबा जितना निष्कामी बनना है, दाता के बच्चे हैं। कैसे भी करके जो कर्मबन्धन हैं वह कट जायें उसके लिए जो पुरुषार्थ करना है वो अब कर लेने का चांस नहीं गंवायेंगे। यह नहीं कहे कि क्या करें थोड़ा कर्मबन्धन है, वेस्ट ऑफ टाइम। यह करें टाइम सफल हो गया, तो टाइम खुश है मेरे से, बाबा भी खुश है क्योंकि टाइम को सफल करने से टाइम भी हमें सफल कराने में हाज़िर होता है। यह महीन बातें जो बच्चे समझते हैं उनसे बाबा खुश हो जाता है। बाबा की बातों को समझेंगे तो बाबा खुश हो जाता है।

5-3-15

"कभी किसी भी कारण से अपनी खुशी नहीं गंवाना क्योंकि बाबा ने आपको खुश रहने और खुश करने की ड्यूटी दी है" (गुल्जार दादी)

आप सबके मन की खुशी आपके चेहरे से दिखाई दे रही है और ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनने के बाद तो ज्यादा खुशी ही रहती है। कोई कारण वश कोई की खुशी कभी थोड़ी कम हो जाती है तो भी बी.के. को फिर से वापस खुश होने में टाइम नहीं लगना चाहिए। उसी समय ही बाबा के पास जाके बाबा को कहना चाहिए बाबा हमारी खुशी हमारे पास ही रहेगी।

और बाबा से खुशी लेके चलेंगे, फिरेंगे, देखेंगे, सब कार्य-व्यवहार करेंगे तो कभी खुशी कम नहीं होगी। वैसे खुशी गंवानी नहीं चाहिए, खुशी गंवाने से आपने देखा होगा कि अवस्था अच्छी नहीं रहती है। ऐसे भी खुश रहने वाला ही सबको अच्छा लगता है, या सीरियस रहना अच्छा लगता है? बाबा की शक्ल देखते हैं तो सदा खुशी की लगती है ना! बाबा बहुत अच्छा लगता है ना। जैसे बाबा सबको अच्छा लगता है, ऐसे हम भी सभी को अच्छे लगें। सबका बाप से प्यार बहुत है तो बाप समान बनना है ना! जैसे बाबा सबको अच्छा लगता है ऐसे हम भी सबको अच्छे लगें। अच्छे लगने चाहिए ना? तो फिर यही ट्रायल करो रोज़ सवेरे उठते ही अपने से विशेष यह प्रामिस करो कि इस सप्ताह में कुछ भी हो जाए किसी भी कीमत पर मुझे मेरी खुशी नहीं गंवानी है। जैसे ही सवेरा आरम्भ हो तब से लेके सारा दिन और रात को सोने तक खुश रहना है और खुश करना है, यह याद रखना है। हर घण्टे चेक करके नोट करो अभी जो समय बीता वो खुशी में बिताया या खुशी के साथ गम तो नहीं रहा? सारा दिन रात खुशी आई और गई, ऐसे तो नहीं होता?

योग में बैठते हैं बाबा से मुलाकात करते हैं, तो बाबा को कहना चाहिए बाबा मुझे आज खुश रहना है, इसमें आप मददगार बनना, ऐसे बाबा से बातें करना तो कभी खुशी नहीं जायेगी। ऐसे बी.के. की खुशी जानी नहीं चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दुनिया का क्या हाल होगा? क्योंकि बाबा ने हम बच्चों को निमित्त बनाया सबको खुश रखने का काम दिया है या कहे ड्यूटी दी है बाबा ने। तो वो खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को कैसे खुश करेंगे इसलिए हमको तो पहले खुश रहना पड़ेगा ना। तो सदा खुश रहना चाहिए ना। हमेशा याद रखो बाबा ने हमारे ऊपर क्या ड्यूटी रखी है! यही ड्यूटी दी है खुश रहो खुश करो। तो याद रहता है ना बाबा की ड्यूटी? बहुत अच्छा क्योंकि संसार बहुत दु:खी है, उसे हमको बदलना है हमारा काम ही क्या है? दु:खी को सुखी बनाना। हम खुश नहीं रहेंगे तो दूसरों को खुश कैसे करेंगे? हो सकता है ना! बस, जिस समय कुछ होवे ना, तो पहले बाबा शब्द याद करो, बस बाबा कहा और खुशी में रहने की जो बाबा से प्रतिज्ञा की है वो याद आने से खुश रहेंगे। बाबा से प्रामिस किया है तो उसे बार-बार याद करने से भी खुशी आ जायेगी। इसमें भले दो दो हाथ उठाओ। भगवान के हम बच्चे खुश नहीं रहेंगे तो और कौन रहेंगे।

दिल से मेरा बाबा कहो तो दिल खुश रहेगी। मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। प्यारा कैसे भूल सकता है! बाबा ने बहुत खुशी का खजाना दिया है तो कभी भी हमारे फेस से खुशी गायब नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो परमात्मा के बच्चे और खुश न रहे, यह हो ही नहीं सकता इसलिए खुशी कभी नहीं गंवाना, जो भी कोई कुछ बात हुई हो उसे किसी को सुना करके वा कैसे भी करके पेट से निकाल दो। उसको अन्दर में नहीं रखो। बाबा के बच्चों को कभी भी कोई अचानक देखें ना, तो खुशी वाली शक्ल ही दिखाई देवे। हो सकता है? अच्छा लगता है ना आपस में ऐसे मिलने से खुशी होती है ना। वाह बाबा वाह, वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह!

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"हम खुद के लिए नहीं खुदा की खुदाई के लिए हैं" (कुमारियों प्रति)

1) भक्त खुद को जगाते या भगवान को? वह हैं देश भक्त और भगवान भक्त। हम हैं भगवान के बच्चे विश्व कल्याण के भक्त। हमारे मन में विश्व को पावन बनाने की, पवित्रता सुख शान्ति देने की शुभ कामना है। हम चाहते हैं सारी विश्व पावन बने, विश्व कल्याण हो। अपना एक ईश्वरीय राज्य, एक धर्म, एक भाषा, एकमत हो जाए तो विश्व में शान्ति होगी। हम सभी की बुद्धि में विश्व कल्याण की भावना है। हम विश्व कल्याण की सेवा पर हैं।

2) हम सब बच्चों को, उसमें भी विशेष कन्याओं माताओं को, जो कर्मबन्धनों से मुक्त हैं उन्हें बाबा ने बहुत बड़ी जिम्मेवारी दी है, सेवा दी है। वरदान दिया है। बख्तावर बाबा ने हमारी तकदीर बनाई है। हम सब यह जानते हैं कि हमारे जीवन की जो घड़ियाँ हैं वह स्वंय भगवान ने हमारी रेखायें बनाई हैं। हमारी रेखाओं में बाबा ने विश्व की सेवा के साथ महादानी, वरदानी मूर्त बनाया है। क्या सचमुच हरेक स्वयं को इतना भाग्यवान समझ अमृतवेले आंख खोलते ऐसा अनुभव करते हो? जीवन दाता ने हमारे जीवन की एक-एक घड़ी स्वयं की

और अन्य की जीवन बनाने के लिए दी है। हमारा जीना किसके लिए है? स्वयं के लिए या विश्व के लिए? लोग कहते जीवन है खाना, पीना, मौज करना। दूसरे कहते देश भक्ति के लिए, तीसरे कहते हमारा जीवन भगवान के लिए है। लेकिन आप सबका जीना किसके लिए है? यह कुमारी जीवन इस संगम पर बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। इस जीवन को इतना महत्वपूर्ण समझते? एक-एक कन्या लाखों की माँ है। एक दुर्गा अनेकों की भावना पूर्ण करने वाली है। एक दुर्गा के ही लाखों भक्त हैं। संतोषी माँ, काली, सरस्वती, लक्ष्मी के अनेकानेक भक्त हैं... तो आप सब इतना पूज्य अपने को समझती हो? वह एक कन्या कौन है? वह एक कुमारी कौन है?

3) हम कई बार सोचती हूँ कि भोजन की जो एक ग्राही खाते वह किसलिए खाते? टेस्ट के लिए या इस रथ से सेवा करने के लिए खाते? हम खुद के लिए हूँ या खुदा की खुदाई के लिए हूँ? मैं दुर्गा हूँ, गायत्री वा सन्तोषी माँ हूँ, क्या स्वयं को ऐसा समझते? मैं भारत की माँ हूँ या विश्व की माँ हूँ। बाबा ने मुझे स्वयं ही भाग्य खींच कर दिया है। बाबा ने कहा है तू एक-एक शक्ति हो। क्या ऐसा स्वयं को समझते हो? मैं 500 कमाने वाली नौकरानी हूँ या विश्व की सेवाधारी हूँ? मेरे प्राण, मेरे श्वाँस मेरे संकल्प विश्व के लिए हैं या स्वयं के लिए हैं? बाबा के लिए हैं या स्वयं के लिए? बाबा के साथ विश्व है। यदि स्वयं को विश्व सेवाधारी नहीं समझते तो मैं किसलिए जिंदा हूँ, मैं किसलिए हूँ?

जीवन में सुख किस बात में है? शादी करूँ, प्रवृत्ति बनाऊं, गृहस्थी बनाऊं या अनेक आत्माओं की दुआयें लूँ? कृपा की, भाग्य बनाने के सेवा की पात्र बनूँ? यह निर्णय करो कि मैं स्वयं किसलिए हूँ? स्वयं को डायमन्ड बनाकर औरों को डायमन्ड बनाने लिए हूँ या ऐसे ही? खुद से पूछो कि मेरी तकदीर का सितारा किसने जगाया है? अपनी तकदीर पर मुझे नाज़ है? निश्चय के आधार पर स्वयं पर नाज़ है? मैं छोटी नहीं हूँ। पहले खुद से पूछो निर्बल हूँ या बलवान? बकरी हूँ या शेरनी? विश्व कल्याण की सेवा के लिए हूँ या हिलती हूँ? निर्भय हूँ या भयभीत? हरेक ने अपना फैंसला क्या किया है?

4) बाबा ने मुझे सेवा का ताज अभी दिया है। कल्प में फिर यह ताज नहीं मिलेगा। अभी ताज नहीं पहना तो कभी नहीं पहन सकेंगी। यदि ताज तख्त को छोड़ा तो तख्ते पर बैठना पड़ेगा। ऐसा तो खुद को नहीं बनाना है ना। कई कहते हैं पैरेन्ट्स हैं, सम्बन्धी हैं। लेकिन सितम तो सभी को सहन करना पड़ता है। प्यार किया तो डरना क्या! प्यार किया है कोई चोरी तो नहीं की है ना। किसी लड़के से प्यार किया तो पाप है। जिसे दुनिया पुण्य कहती, उसे बाबा पाप कहता है। बाबा ने अजामिल जैसे हम पापियों का उद्धार किया। ज्ञान से पहले भी जो पाप हुए, उसे भी बाबा बख्श देता (खत्म कर देता) परन्तु बाबा यह भी कहता अब अगर मेरे होकर नहीं रहेंगे तो पापों का बोझ भुगतना पड़ेगा। मेरा बनेंगे तो चौपड़ा साफ हो जायेगा। अब कोई पाप कर्म नहीं करो, यदि अब भी उधर बुद्धि जाती है तो एक का सौगुणा भोगना पड़ेगा।

5) बाप का बनना अर्थात् जीवन से मरना। इस जीवन में कोई भी आसक्ति, ममता है उससे भी मरना। पुराने स्वभाव, मूड आफ, जिद्द, क्रोध, छोटी-मोटी गलतियाँ सबसे मरना है। स्व परिवर्तन करना है। परिवर्तन अर्थात् मरना। जितना परिवर्तन करेंगे उतना बाप से प्यार रहेगा। अगर दीपक बनना चाहती हूँ तो अंधकार मिटाना है। जो दीपक जगमगाता रहे, वही प्यारा है। अगर टिमटिमाता हुआ दीपक है तो उसे उठाकर रख देते। रोशनी वाला सम्भाल कर रखते। यदि दीपक हूँ तो सबको रोशन करना है। खुद अंधकार में हूँ तो कोई प्यार नहीं करेगा।

6) मुझे बाबा ने भाग्य दिया है विश्व कल्याण के लिए। मुझे अनेकों का उद्धार करना है। यदि यह फैंसला है तो सब फैंसला है फिर तो सेन्टर पर रहने के लिए अपनी तैयारी करो। अपने आप से खूब फैंसला करो, मनन करो। डिसकस करो। अभी अपने आप से पूछो मैं ज्ञान में चल सकूँगी? चलना है तो पूरा मरकर चलना है।

ब्रह्माकुमारी जीवन माना बाबा का नाम बाला करना है, ना कि बदनाम। हमें बाबा का नाम बाला करने का ही ठेका उठाना है। दुनिया में भी कई ऐसे होते जो कहते हैं कि हम सत्यता के पीछे मर मिटेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे। सत्य है तो प्राण हैं, सत्य नहीं तो मर जायेंगे। तो दुनिया क्या भी करे, मुझे सत्यता के पीछे जान देनी पड़े तो दे देंगे। नाम बदनाम नहीं करेंगे। एक की गलती हजारों को बदनाम करती है। सेन्टर का भी नाम बदनाम, शहर वा संस्था सबका नाम बदनाम.. तो नाम बाला करो या बदनाम - यह आपके हाथ में है, उंचा बनो तो नाम बाला है, नीचे जाओ तो नाम बदनाम है। तो देखो मेरे में नाम बाला करने की शक्ति कितनी आई है?

7) यह संकल्प जरूर है जब हमारे सेन्टर्स हर साल दुगुने होते जाते तो टीचर्स भी तो दुगनी होनी चाहिए। बोलने में भी लज्जा आती है कि हैन्ड्स नहीं है, इसलिए हिम्मत बढ़ाओ। कन्यायें हमारी हिम्मत को पीछे कर देती। क्वालीफाइड ब्रह्माकुमारी कम होने कारण दिल छोटी होती। आप दिल बड़ी करो। जीवन दान से ही दिल बड़ी होगी। एक बाप पर जीवन दान करते हो।